PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 6

कच्चे तेल की (Crude Oil) कीमतों में उच्चावचनों का अवलोकनार्थ अध्ययन

डॉ. आर. एच. नगरकर
सहयोगी प्राध्यापक
जी. एस. कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ॲड इकॉनामिक्स,
नागपूर – 06 **महाराष्ट्र भारत**

प्रस्तावना :–

कच्चे तेल **(crude oil)** की कीमत का वर्तमान अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण स्थान है, यह वित्तीय बाजारों के साथ साथ प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओ, निगमों और सरकार को भी प्रभावित करती है। कच्चे (इंधन) तेल में होने वाले उच्चावचनों का न केवल शेयर बाजारों पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है अपितु वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है। उपयोग की दृष्टि से कच्चे तेल की प्रक्रियाकरण के बाद उसे प्रत्यक्षतः उपयोग के लिए पेट्रोल और डिजेल में परिवर्तित किया जाता है। इसकी आवश्यकता मुख्यतः परिवहन, बिजली निर्माण वस्तुओं का उत्पादन के लिए होती है। संपूर्ण विश्व में इसके उपयोग को किसी भी सूरत में फिलहाल टाला नही जा सकता। इसके उपयोग को नियंत्रित नही किया जा सकता। इसका महत्व, इसकी आवश्यकता और इसके उपयोग को देखते हुए इसकी कीमत के व्यवहार महत्वपूर्ण हो जाता है। इसकी कीमत में होनेवाले नियमित उतारचढाव को देखना जरूरी है जिससे इसे नियंत्रित करने के लिए कोई प्रभावी नितियां बताई जा सके।

कच्चे तेल **(crude oil)** की कीमतों में उच्चावन उसकी मॉग और पूर्ति से प्रभावित होते है। कीमतों के उच्चावनों और अस्थिरता पर वित्तीय बाजार के खिलाडियों की निगाह बनी होती है। जो आगामी दृष्टिकोण में ध्यान में रखकर होते है। ये आयात एवं निर्यात करने वाले देशों की वास्तविक वृद्धि में परिवर्तन लाने के लिए कारण हो सकते है। कच्चे तेल से बने उपयोगी द्रव्य सीधे तौर पर घरों और व्यवसायों को प्रभावित करते है। अध्ययन से जाना जा सकता है कि तेल की कीमते वैश्विक अर्थव्यवस्था

को कैसे प्रभावित करती है। कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि मूद्रास्फिति को बढाने और आर्थिक विकास को नीचे लाने का कारण बनती है।

जैसे की उल्लेख किया कि तेल की कीमतों पर कच्चे तेल की मांग और पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही उसके निर्माण प्रक्रियाकरण और परिवहनो की लागतो का मूल्य भी प्रमुख है। दीर्घकाल में तेल की कीमतो का निर्धारण मांग और पूर्ति के संतुलन से होता है। हालांकि तेल की कीमतों की भविष्य में क्या कीमत होगी इसका अनुमान लगाना कठीन होता है क्योंकि प्राकृतिक आपदा, अनिश्चित भावी घटनाएं, व्यापारिक युद्ध, OPEC (ओपेक) के निर्णय, आय में होनेवाली वृद्धि इसके प्रभावकारी घटक है, पूर्ति पक्ष के घटक जैसे तेल का भंडार, उत्पादन में कटोती, तेल की कमी तेल के कार्टेल (cartel) के निर्णय, टेक्नॉलॉजी में परिवर्तन भी इसके प्रमुख घटक है। ये सभी पहलू प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक अवधी में तेल की कीमतों को प्रभावित करते है। कच्चे तेल की कीमतों का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है। प्रस्तुत पेपर में अंतर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों का निरिक्षण और संक्षिप्त अध्ययन किया गया है।

कच्चे तेल की कीमतों में उच्चावनों (उतार–चढाव) का निरिक्षण व अध्ययन :

प्रस्तुत अध्ययन में विगत 6 वर्षो में कीमतों में उच्चावनों का निरिक्षण किया जा रहा है। (वर्ष 2014 से वर्ष 2019 तक)

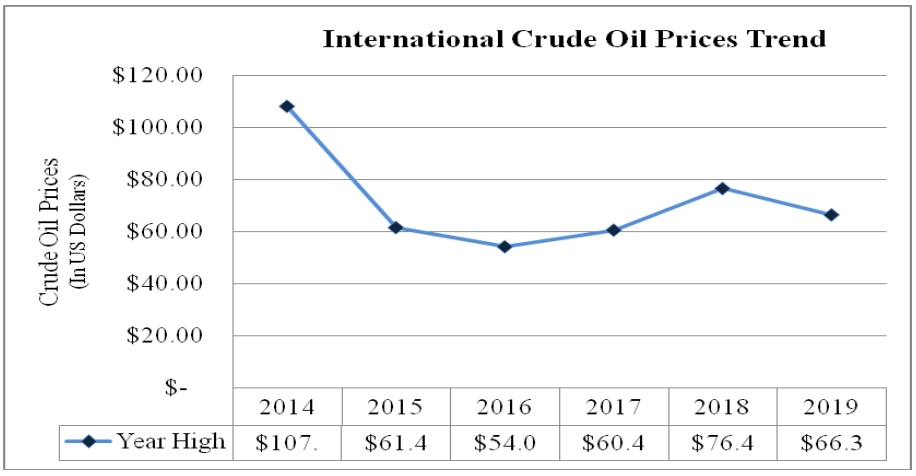

Source: MacroTrends

Year-Wise Reasons behind Oil Price Fluctuations

रेखाचित्र से स्पष्ट हो रहा है कि वर्ष 2014 में कच्चे तेल की कीमत दर्शायी गयी स्थिति में सर्वाधिक उचे थे। हालाकि इसके पहले के वर्षो की तुलना में 2014 में बड़ी गिरावट देखी गयी। वर्ष 2015 में इसमें काफी गिरावट आयी, जिसमें 2016 में और कमी आयी। जबकि वर्ष 2017 में वर्ष 2016 की तुलना में वृद्धि होकर 2015 जितनी बराबर हो गयी। इसके बाद 2018 में वृद्धि हुई किंतू वो 2014 के मुकाबले काफी कम थी। जिसमें वर्ष 2019 में पुनः कमी आयी जो 2015 से किंचित अधिक रही।

विश्लेषण :–

कच्चे तेल की भावी किमतो का अनुमान का लगाना जटील है जिसके लिए अनेक कारण, घटक, पहलू व पक्ष उत्तरदायी होते है। अनेक अप्रत्यक्षित परिवर्तन भी तेल की कीमतों को परिवर्तित करते है। निम्नलिखित अवधि में वर्षानुसार उच्चावचनों का अध्ययन है। यह एक वर्षभर की कीमतों का औसत है।

- **वर्ष 2014** : वर्ष 2014 के पहले के वर्षो की तुलना में वर्ष 2014 में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आयी. मुख्य कारण या मांग की कमी और उत्पादन अधिक। इसके अलावा सऊदी अरब के कार्यो का भी योगदान रहा। तेल की कम कीमतों का समर्थन करके सऊदी अरब ने यह अनुमान लगाया कि यू.एस. और कनाडा जैसे देश लाभ की कमी थी। वजह से कम लागतवाली तेल निकालने की प्रक्रिया अपनायेंगे। जो सही साभित हुआ और 2014 में की अंतिम तिमाही आते–आते कीमतों ने नीचे की ओर झूकाव पकड़ा। तब कच्चा तेल बैरल 107.95 डॉलर था।

- **वर्ष 2015** : कीमतों में काफी गिरावट इस वर्ष में देखी गयी। जब कच्चा तेल की कीमत प्रति बैरेल 61.4 डॉलर हो गयी। इसके कारण इस प्रकार है– तेल निकालने वाले व्म्ब् (ओपेक), देश व कंपनियों का योगदान तो है ही। दूसरा, तेल की मांग की तुलना में आपूर्ति अधिक हो गयी क्योंकि मांगकर्ता देशों में युरोप और अन्य विकसनशील देशों की अर्थव्यवस्थाएँ बिगड रही थी। तिसरा, वाहन की टेक्नॉलॉजी में सुधार के कारण कम पेट्रोल डिजेल की आवश्यकता, उर्जा के नए पर्यायी साधनों का बढ़ता उपयोग। चीन जैसे बड़े मांगकर्ता देश की अर्थव्यवस्था में उम्मीद से अधिक निराशाजनक स्थिती थी, इसमें भी इंधन की मांग कम हूयी। अमेरिका का इसी वर्ष में कच्चे तेल का उत्पादन अपने सबसे ऊँचे स्तर पर पहूच गया, इससे भी पूर्ति बहूत बढ़ कर अतिरिक्त हो गयी। फलस्वरूप कीमतो की कमी दिखाई दी।

- **वर्ष 2016** : सबसे अधिक गिरावट इस वर्ष में हुयी। जब कच्चे तेल की कीमत प्रति बैरल 54 डॉलर हो गयी। OPEC (ओपेक) से उत्पादन में निरंतर बढ़ोतरी हो रही थी। OPEC (ओपेक) गिरती किमतों की परिस्थिती को नियंत्रित करने के बजाये आपस में बहस करने में समय व्यतीत करता रहा। बाजार में हिस्सेदारी के लिए शेल निर्माताओं से भिडने के अपने निर्णय के कारण स्थिती खराब हो गयी थी।

- **वर्ष 2017** : इस वर्ष अमेरिका में तेल का उत्पादन स्तर नीचे गिर गया। दुसरी और वैश्विक मांग भी बढ़ने लगी। गत वर्ष की तुलना में थोड़ी बढ़ी जो थोडी बढ़कर प्रति बैरल 60.42 डॉलर हो गयी। यह कीमत वर्ष 2015 के लगभग आसपास थी। हालांकि यह कीमत भी गिरावट को ही दर्शाती है।

- **वर्ष 2018** : कच्चे तेल का उत्पादन और मांग को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा रहा था कि प्रति बैरल 70 डॉलर कीमत होगी। यह सही सिद्ध हुआ और इस वर्ष में प्रति बैरल 76.41 डॉलर कीमत रही। इसके आधार रहे, ईरान पर व्यापारिक प्रतिबंध, अमेरिका और चीन के मध्य व्यापारिक युद्ध, अमेरिका राष्ट्रपती द्वारा सऊदी अरब को ईरान से प्रतिबंध की छुट देने की झूटी घोषणा, नतीजन तेल की कीमतों में उछाल नही आया।

- **वर्ष 2019** : इस वर्ष अमेरीका का तेल उत्पादन में वृद्धि हुयी, विश्लेषकों और निवेशकों ने कमजोर मांग रहने की घोषना की, अमेरिका के उत्पादन ने कीमतों को नियंत्रित रखा। इस वर्ष की कच्चे तेल की कीमत गत वर्ष की तुलना में गिरकर प्रति बैरल 66.30 डॉलर हो गयी।

भारत में कच्चे तेल (crude oil) की कीमतों के उच्चावनों का स्थूल अर्थशास्त्रीय प्रभाव

1. सामान्यतः तेल की कीमत में प्रति बैरल 10 डॉलर की वृद्धि के कारण लगभग 17000 करोड रू से 18000 करोड रू. की सब्सीडी में वृद्धि हो जाती है। यदि तेल की औसत कीमत प्रति बैरल 65 डॉलर हो जाने से सब्सीडी की राशी 55000 करोड हो जाती है, ऐसा एक अध्ययन कहता है। पेट्रोल–डिजेल में एक्साईज डयूटी के 1 रू. की कमी होने पर सरकार के राजस्व में 12–13 हजार करोड रूपये की कमी हो जाती है।

2. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमत बढ़ने से भारत के आयात के भूगतान राशी में वृद्धि हो जाती है क्योकि भारत इसका बड़ा आयातक देश है। यह भूगतान गल्फ देशो को अधिकांशतः किया जा रहा है। जितनी कीमत बढेगी उतना ही देश के भूगतान शेष के लिए विपरित स्थिती निर्माण होगी।

3. कच्चे तेल की कीमतों का सीधा प्रभाव जीवनावश्यक एवं उपभोग की वस्तुओं की कीमत पर पड़ता है। आम आदमी की जब पर पेट्रोल–डीजेल की कीमतों में वृद्धि अथवा कमी का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। यदि कच्चे तेल की कीमत बढेगी तो बाजार की समस्त वस्तुओं की कीमत बढकर देश में मूद्रास्फिती निर्माण होगी। पेट्रोल–डिजेल की कीमत वृद्धि से परिवहन लागत एवं उत्पादन लागत में वृद्धि हो जाती है। देश के प्रत्येक व्यक्ति को मूद्रास्फिती को भूगतना पड़ता है।

4. मूद्रास्फिती की स्थिति से निपटने के लिये देश को मौद्रिक नीति में भी परिवर्तन करना पड़ता है। जिसका देश की अर्थव्यवस्था पर अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं पेट्रोल–डिजेल की कीमतों में वृद्धि के कारण निर्माण हुयी मुद्रास्फिती से निपटने के लिए व्याजदरों में वृद्धी का उपाय किया जाता है। व्याजदरों की गई लगातार वृद्धी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

उपरोक्त स्थूल अर्थशास्त्रीय परिणाम अर्थव्यवस्था को नीचे लाने के कारण बनते है। घाटे का बजट बनाने की निरंतर प्रवृत्ति निर्माण होती है। सरकार को परिस्थिती निपटने के लिए अनेक कदम उठाने पड़ते है जो समाज और देश में बेचैनी का वातावरण पैदा करते है।

निष्कर्ष :

ओपेक (Organization of Petroleum Exporting Countries) विश्व के 14 तेल उत्पादक देशो का संगठन है। इसमें मूख्यतः अरब–आफ्रिकी देश समाविष्ट है। देशों में अमेरिका, मैक्सिको, रूस, कजाकिस्तान मुख्य है। इनके द्वारा विश्व की इंधन निर्माण के लिए कच्चे तेल का उत्पादन एवं पूर्ति की जाती है। हम निरंतर देखते है कि कच्चे तेल की कीमतों में लगातार उच्चावचन आते है, अर्थशास्त्र के नियम के अनुसार इसकी मांग और पूर्ति के आधार पर कीमत निर्धारित होती है। यह किमते अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तय होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में एक वर्ष की अवधि में हुए कीमतों के निरंतर बदलाव का वार्षिक औसत कीमत का उल्लेख किया गया है। इन कीमतों के उच्चावनों का प्रभाव संपूर्ण विश्व के देशों की अर्थव्यवस्था पर सीधे पड़ता है। इन कीमतों के उच्चावचनों के अन्य जटील कारण भी है। ओपेक के निर्णय, उत्पादक देशों में व्यापारिक युद्ध, वहॉ की राजनितिक एवं आर्थिक स्थिति, कुछ देशों पर लगाये गये प्रतिबंधो, आयातक देशो की राजनीतिक, आर्थिक स्थिती एवं निर्णय मूख्य है। यह स्पष्ट होता है कि कच्चे तेल की कीमतों में स्थिरता का अभाव होता है, वो लगातार कम या ज्यादा होती है। प्रस्तुत अध्ययन में जिस अवधि का उल्लेख किया गया है। उस दौरान कीमतें पहले की अवधियों की तुलना में कम रही उसमें गिरावट स्पष्ट दिखाई दी है। भारत तेल का बड़ा आयातक देश है। अतः तेल की कीमतों में होनेवाले उच्चावचनों का देश की अर्थव्यवस्था, मौद्रिक नीति, सरकार, समाज और आम उपभोक्ता पर सीधे परिणाम होते है।

संदर्भसूची :

1) https://www.frbsf.org/education/publications/doctor-econ/2007/november/oil-prices-impact-economy/

2) file:///C:/Users/Pallvi/Downloads/Analysis_of_the_International_Oil_Price_Fluctuatio.pdf

3) https://www.livemint.com/Opinion/PnHcP040QNZYkLT5BWK5rL/The-impact-of-rising-oil-prices-on-Indian-economy.html

4) https://www.macrotrends.net/2516/wti-crude-oil-prices-10-year-daily-chart

5) http://pubdocs.worldbank.org/en/339801451407117632/PRN01Mar2015OilPrices.pdf

6) https://pubs.aeaweb.org/doi/pdf/10.1257/jep.30.1.139

7) https://blogs.worldbank.org/developmenttalk/what-triggered-oil-price-plunge-2014-2016-and-why-it-failed-deliver-economic-impetus-eight-charts

8) https://oilprice.com/Energy/Oil-Prices/Why-Oil-Prices-Rose-And-Crashed-In-2018.html